

---

# Shri Janaki Jivana Ashtakam

---

## श्रीजानकीजीवनाष्टकम्

---

### Document Information

Text title : Janaki Jivana Ashtakam

File name : jAnakIjIvanAShTakam.itx

Category : devii, sItA, aShTaka

Location : doc\_devii

Latest update : October 15, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 21, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीजानकीजीवनाष्टकम्



आलोक्य यस्यातिललामलीलां सद्भाग्यभाजौ पितरौ कृतार्थी ।  
तमर्भकं दर्पकदर्पचौरं श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ १ ॥

श्रुत्वैव यो भूपतिमात्तवाचं वनं गतस्तेन न नोदितोऽपि ।  
तं लीलयाह्लादविषादशून्यं श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ २ ॥

जटायुषो दीनदशां विलोक्य प्रियावियोगप्रभवं च शोकम् ।  
यो वै विसस्मारतमार्द्रचित्तं श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ ३ ॥

यो वालिना ध्वस्तबलं सुकण्ठं न्ययोजयद्राजपदे कपीनाम् ।  
तं स्वीयसन्तापसुतप्तचित्तं श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ ४ ॥

यद्धाननिर्धूतवियोगवह्निर्विदेहबाला विबुधारिवन्याम् ।  
प्राणान्दधे प्राणमयं प्रभुं तं श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ ५ ॥

यस्यातिवीर्याम्बुधिवीचिराजौ वंश्यैरहो वैश्रवणो विलीनः ।  
तं वैरिविध्वंसनशीललीलं श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ ६ ॥


यद्रूपराकेशमयूखमालानुरञ्जिता राजरमापि रेजे ।  
तं राघवेन्द्रं विबुधेन्द्रवन्द्यं श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ ७ ॥

एवं कृता येन विचित्रलीला मायामनुष्येण नृपच्छलेन ।  
तं वै मरालं मुनिमानसानां श्रीजानकीजीवनमानतोऽस्मि ॥ ८ ॥


इति श्रीजानकीजीवनाष्टकं सम्पूर्णम् ।

The stotra is based on the Adhyatmaramayana,  
seven shlokas representing seven kANDas.

---

——  
*Shri Janaki Jivana Ashtakam*

pdf was typeset on January 21, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

